महाभारतदर्पण

प्रथम भाग

आदि, सभा, बनपर्व हैं

सर्वाधिकारी श्री महाराजाधिराज श्री उदितनारायण
काशिराजकी आज्ञानुकूल

श्री गोकुलनाथ प्रभृति कविश्वरोंने संस्कृतका सारांश यथावस्थितले अतिपरिश्रमसे भाषा, वर्ण, मात्रा वृत्तमें अतिरुचिर रचना किया और उक्त काशीनरेश ने कलकत्ता महानगरके शास्त्रप्रकाश मुद्रायन्त्रमें श्री पण्डित लक्ष्मीनारायण से शुद्धकराय संवत् १८८६ में मुद्रित कराया था

सम्पूर्ण विद्यानुरागियोंके अनुरागार्थ और पौराणिक ऐतिहासाकांक्षियों के पठन पाठनार्थ

बाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

तीसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

अगस्त सन् १८९१ ई०